Who am I, Subatomic Being ? How we earn Good or Bad Energy by Karma

सब को परम शांति। आदरणीय दादा जी, आदरणीय ब्रह्मा मां आप को मेरा सादर प्रणाम और ढेर सारा प्यार। कुछ दिनों से ऐसे ही मन में विचार आ रहे थे कि हम ओरिजनली कौन हैं और यह दुनिया, यह हम।यह पूरे का पूरा जो एक जीवन की सायकल चल रहा है। उसका बेसिकली एक मूल आधार क्या है। तो इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर मैं जानने की कोशिश कर रही थी। जो मैं आप के साथ शेयर कर रही हूं। देखिए मैंने ऐसे सोचा कि यदि हम अपने आप को बहुत डीपर लेवल पर जान लें, ओरिजिनली हम क्या हैं। तो जिस दिन हम खुद का सच जान लेंगे। उस दिन हम किसी से भी शिकायतें करना बंद कर देंगे। चाहे वो हमारे आस-पास के लोग हैं। चाहे वो भगवान हों। हमें सिर्फ अपने आप को यह जानना है कि हम ओरिजनली हम कौन हैं और हम खुद हर पल अपने आप को कैसे बनाते हैं। इसको जानने से पहले हमको कुछ बातों को गहराई से जानना होगा। मैं उनके बारे में आप को बताती हूं। देखिए ज्ञान हमें एक चीज बताता है। ज्ञान हमें बताता है। जब किसी भी ब्रह्मांड की रचना होती है। तो उसमें तीन शक्तियां काम करती हैं। लॉर्ड ब्रह्मा, लॉर्ड विष्णु एंड लॉर्ड शिव। तीनों का अपना अलग-अलग एक रोल है। लॉर्ड ब्रह्मा इस पूरे ब्रह्मांड की रचना करते हैं। लॉर्ड विष्णु पालना करते हैं और लॉर्ड शंकर भगवान उसका संहार करते हैं और ज्ञान हमें यह बताता है कि जैसे ब्रह्मांड के अंदर होता है। वैसे ही पिंड के अंदर होता है। इसका अर्थ है कि जैसे ब्रह्मांड एक पूरी शक्ति का संचालन कर रहा है। इसी तरह से यह शक्तियां हमारा संचालन कर रही हैं। इसी से ही हमें यह पता लगेगा कि हमारी खुद की पहचान क्या है। हम खुद कौन हैं। तो हम अपने आप को देखते हैं। लॉर्ड ब्रह्मा क्या करते हैं, सृष्टि का निर्माण। इसी तरह से हमारे शरीर के अंदर क्या होता है। सैल का ग्रो मतलब सैल डबैल्प होते हैं। तो जब हमारे शरीर का निर्माण होता है। तो डेवल्पमेंट ऑफ द सैल्स। सैल्स का बनना फर्स्ट प्राइमरी स्टेप है। जैसे लॉर्ड ब्रह्मा ब्रह्मांड बना रहे हैं। उसी तरह से हमारे शरीर में सैल्स डबैल्प हो रहे हैं। लॉर्ड विष्णु पालना करते हैं। इसी तरह से हमारे शरीर के अंदर क्या हो रहा है। सैल्स की ग्रोथ हो रही है। 2nd स्टेप, पहले डबैल्प हुई। फिर उसकी ग्रोथ हुई। मतलब उसकी वृद्धि हुई। तीसरा लॉर्ड शिव क्या करते हैं। फिर शंकर उसका संहार करते हैं। इसी तरह से हम अपने शरीर को देखें। तो हमारे शरीर में भी सैल्स की डैथ होती है। जिसे हम अपोपटोसिस कहते हैं। तो तीन शक्तियां जो ब्रह्मांड में काम करती हैं या किसी भी सिस्टम में काम करती हैं। वो ही तीन शक्तियां हमारे अंदर काम करती हैं। ज्ञान हमें यह भी बताता है कि जैसे इस ब्रह्मांड के अंदर जब भगवान ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि की रचना की। तो उन्होंने सप्त ऋषि बनाए। मुझे ऐसा लगता है। सप्त ऋषि या हम किसी भी क्रिएशन को देखें। तो यह सिर्फ और सिर्फ एक इनर्जी की फॉर्म हैं। सप्त ऋषियों ने ही हमारी धरती के ऊपर सात लोक ऊपर, सात लोक नीचे बनाए। मतलब यह पूरे का पूरा एक इनर्जी का ग्रेडिएंट है। एक चीज हमें ओर ध्यान में रखनी होगी कि भगवान का खुद का स्वरूप क्या है। भगवान खुद हैं प्योर, डिवाइन वाइट लाइट। निराकार परब्रह्म परमेश्वर। तो वो क्या हैं, वाइट लाइट मतलब आप ध्यान से देखें। जब इंसान संत बन जाता है। कोई प्योर तपस्वी बन जाता है। ऑरा भी कैसा हो जाता है, प्योर वाइट मतलब लाइट का। लाइट के साथ कनेक्शन है। तो हमें यह चीजों से पता लगता है। एक चीज ओर जब ब्रह्मांड बनता है। तो वहां पर एक साउंड है। ऊं की साउंड। तो क्या है। इन दोनों बातों से हमें पता लगता है।

इस पूरी की पूरी सृष्टि के अंदर दो ही चीजें हैं।अपडेटिंग प्रिंसिपल, वन इज लाइट एंड एनॉदर वन इज साउंड। इसी तरह से हमारे शरीर के अंदर भी क्या है। लाइट एंड साउंड से बने हुए, हम

बिंग्स हैं। हम ह्यूमन बिंग्स कैसे बने हैं। प्रकाश और ध्वनि से और जिस दिन हम इस प्रकाश और ध्वनि को गहराई से समझ लेंगे। उसी दिन हमारा किसी से भी कंप्लेंट करना बंद हो जाएगा। क्योंकि हम अपना निर्माण हर पल खुद ही करते हैं। भगवान ने एक ऐसी रचना बनाई हुई है। इसमें कोई किसी के लिए जिम्मेदार नहीं है। हम सिर्फ और सिर्फ खुद के लिए जिम्मेदार हैं। कैसे, वो हम समझते हैं। देखिए जब हमने कहा कि भगवान क्या हैं, प्योर डिवाइन लाइट हैं। आज हम यह जानते हैं। जब हम किसी वाइट लाइट को किसी प्रिज्म के थ्रू पास करते हैं। तो वो लाइट स्प्लिट होती है। उसके अंदर से सात कलर निकलते हैं। जिसे हम बोलते हैं, विबग्योर VIBGYOR, विब मतलब वॉयलट, इंडिगो, ब्लू, ग्रीन, येलो, ऑरेंज, एंड रेड, 7 कलर। यदि आप अपने आप को जानते हो और आप चक्रा के बारे में देखेंगे। तो हमारे शरीर के अंदर में 7 इनर्जी सेंटर होते हैं। सात इनर्जी सेंटर का कलर भी विबग्योर ही होता है। हमारे जैसे सबसे ऊपर वाले सहस्रार चक्र का जो कलर है, वो वॉयलट है। सबसे नीचे वाले मूलाधार चक्र का कलर रेड है। इसी तरह से वाकी के कलर हमारे बीच के चक्रों के हैं।

इसका मतलब क्या है। हम भी लाइट की फॉर्म हैं। इनर्जी एक लाइट की फॉर्म में कैसे संचित हो रही है।

ऊर्जा चक्रों के रूप में, अब ऊर्जा चक्र तो हैं। हम सबके अंदर हैं। तो पहले हम यह समझते हैं कि हम सबके अंदर क्या कॉमन है। फिर हम यह देखेंगे कि हम एक दूसरे से डिफरेंट क्यों है। देखिए हम यह जानते हैं कि हम सब लोग पांच तत्त्वों से मिलकर बने हैं। पृथ्वी, अग्नि, आकाश, वायु और जल और पूरी सृष्टि में हमें जो कुछ भी दिख रहा है। इसके अंदर भी पांच तत्त्व हैं। पृथ्वी, अग्नि, आकाश, वायु और जल । तो दूसरी चीज, हमें पता है। हमारे अंदर 70 से 80% पानी है। तो इसका मतलब यह है कि मेरे अंदर 70 से 80% पानी है। तो दूसरा व्यक्ति जो मेरे साथ खड़ा है। उसके अंदर भी वही है। जो तीसरा खड़ा है, उसमें भी वही है। मैं भी पांच तत्त्वों से मिलकर बनी हूं। वो भी पांच तत्त्वों से मिलकर बना है। वाकी चार तत्त्व 20% मेरे अंदर हैं। वो दूसरे के अंदर भी हैं। तो जो मैं हूं। वो दूसरा क्यों नहीं है। यह सवाल मन में आता है ना। तो हमें यदि जानना है कि हम ओरिजनली क्या हैं या हम एक दूसरे से डिफरेंट क्यों हैं। वो बहुत गहराई से समझना पड़ेगा। हमें एक चीज देखनी है कि हम पांच तत्त्वों से मिलकर तो बने हैं। लेकिन यह पांच तत्त्व किस से मिलकर बने हैं। जैसे पानी, पानी क्या है H2O, वायु तत्त्व क्या है, ऑक्सीजन O2, नाइट्रोजन N2, CO2 कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड CO, तो यह सब क्या हैं। डिटेल लेवल पर आप देखें। तो एलिमेंट्स ही हैं। कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, सल्फर। यह सब एलिमेंट्स ही हैं। हम एलिमेंट्स से मिलकर बने हुए एक कॉम्बीनेशन हैं। इसके भी ओर थोड़ा सा डीप में जाएं। तो हर एलिमेंट्स कैसे बना है, एटम से। एटम किस से मिलकर बना हुआ है, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन से। इलेक्ट्रॉन किस से मिलकर बना है, कुछ सबअटॉमिक पार्टिकल्स से। प्रोटॉन किस से मिलकर बना है, कुछ सबअटॉमिक पार्टिकल्स से। न्यूट्रॉन किस से मिलकर बना है, कुछ सबअटॉमिक पार्टिकल्स से। सबअटॉमिक पार्टिकल्स किस से मिलकर बने हैं। सबअटॉमिक पार्टिकल्स बने हैं, वाइब्रेशंस से। तो जब वाइब्रेशंस अलग-अलग ओरियंटेशन में होते हैं। तो वो कुछ डिफरेंट तरह के सबअटॉमिक पार्टिकल्स का निर्माण करते हैं और जब सबअटॉमिक पार्टिकल्स एक अलग-अलग कॉन्बिनेशंस में जुड़ते हैं। तब एक इलेक्ट्रॉन, एक प्रोटॉन, एक न्यूट्रॉन बनता है। अब हमें यहां पर एक चीज ध्यान रखनी होगी कि सबअटॉमिक पार्टिकल्स की अपनी एक प्रॉपर्टी होती है। कैसी, उनके अंदर होता है चार्ज। चार्ज मतलब एक पर पॉजिटिव हो सकता है। दूसरे पर नेगटिव हो सकता है। दूसरा क्या होता है। स्पिन की प्रॉपर्टी। मतलब एक पार्टिकल के ऊपर अपवर्ड डायरेक्शन में ओरियंटेशन हो सकती है। दूसरे में डाउनवर्ड डायरेक्शन में मतलब ऑपोजिट स्पिन। तीसरा क्या होता है, मोमेंटम। मोमेंटम ऑफ द पार्टिकल कैन बी डिफरेंट। मास और विलोसिटी डिफरेंट हो सकती है। तो यह प्रॉपर्टी किसकी है। एटम तो बना है, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन से। लेकिन कितने प्रोटॉन, कितने इलेक्ट्रॉन, कितने न्यूट्रॉन। यह सब क्या कर रहे हैं। एटम को एक दूसरे से अलग-अलग कर रहे हैं। अलग-अलग एटम का क्या मतलब है कि एटम के अंदर ही एक ऐसा सबटल लेवल पर एक ऐसा मकैनिज्म है। जिससे हर एटम की अपनी एक यूनीक इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फीग्रेशन है और उसकी अपनी एक अलग यूनीक प्रॉपर्टी है। आप को यह याद रखना होगा कि जब चार्जेस मतलब एक पार्टिकल के ऊपर जब पॉजिटिव चार्ज होता है। स्पोज दूसरे पार्टिकल पर भी पॉजिटिव चार्ज है। तो लाइक चार्जेस हमेशा रिपेल करते हैं। इसी तरह से जब एक पार्टिकल पर नेगेटिव चार्ज है और दूसरे पार्टिकल पर भी नेगेटिव चार्ज है। तो वो भी एक दूसरे को रिपेल करते हैं। जब एक पार्टीकल पर पॉजिटिव चार्ज है और दूसरे पार्टिकल पर नेगेटिव चार्ज है। तो वो आपस में एक दूसरे को अट्रैक्ट करते हैं। तो यह अट्रैक्शन या रिपल्शन का जो प्रोसेस है। यह बेसिकली क्या है। यह सबटल लेवल पर आप देखें। तो यह भी इनर्जी का एक्सचेंज है। आप किसी से खुद भी दूर जाते हैं या आप किसी के पास आते हैं। तो यह सब क्या है कि जो इनर्जी बिंग आप हैं, दूसरा भी। हम बेसिकली कुछ भी नहीं हैं। हम एक इनर्जी बिंग हैं और हम यदि अपने आप को ओर ध्यान से देखें। तो हम एक सबअटॉमिक बिंग हैं और यह सबअटॉमिक बिंग हमारा जो पूरा ओवरऑल ऑरा है। उस सबके अंदर और हमारे जो चक्रास हैं। इनके अंदर यह इनर्जी इम्प्रेगनेटिड है। तो जब भी कोई व्यक्ति हमारे पास आता है। तो तुरंत ही हम एक बिहेव करते हैं। यह तुरंत क्या है, विलोसिटी। इनर्जी के साथ मास भी जुड़ा है। उसी के साथ विलोसिटी भी जुड़ी है। तो किसी की तरफ एकदम हमारा मन होता है। बात करने चल देते हैं और एक यह होता है, हम किसी को देखकर ही दूर चले जाते हैं। तो यह क्या है, इंस्टैन्टेनियस एक्शन। तो एक ह्यूमन दूसरे ह्यूमन से कैसे बिहेव कर रहा है। वो डिपेंड करता है कि आप की खुद की इनर्जी बिंग आप क्या हो और दूसरा इनर्जी बिंग क्या है। तो यदि आप अपने आप की ओरिजनलिटी को देखोगे ना। एक इनर्जी ही दूसरी इनर्जी से बात करती है। यही अल्टीमेट सत्य है। पर हमें इससे पहले यह जानना होगा कि हम अपने इस इनर्जी बिंग को बनाते कैसे हैं। यह हमारे लिए कोई नहीं बनाता। यह हम खुद ही

बनाते हैं। देखिए जब भगवान ने हमारी कभी रचना की होगी। तो भगवान ने हमें सबसे पहले एक सोल बनाया मतलब भगवान की तरह ही हम निराकारी थे। उस निराकारी ने ही जब हमारा शरीर बनाया होगा। तो हमने एक आकार लिया और आकार के बाद ही हम साकार पांच तत्त्वों के अंदर आ गए। हमें यहां पर यह समझना होगा। हम सभी बने तो पांच तत्त्वों के अंदर हैं। लेकिन मेरे अंदर या आप के अंदर या किसी तीसरे व्यक्ति के अंदर भी 80% पानी और 20% दूसरे तत्त्व हैं। लेकिन हम एक दूसरे से डिफरेंट किस में हैं।

अपनी आईनाइज स्टेट के अंदर। दिस इज द मोस्ट इंपोर्टेंट पॉइंट। लाइक वॉटर का केमिकल स्ट्रक्चर तो H2O है। लेकिन हमें यह देखना है कि वॉटर भी जब स्प्लिट होता है। तो वो क्या बनाता है, H+ OH- दूसरे में भी वो वही बनाता है। इसी तरह से जब ऑक्सीजन है। वो O2 अपनी न्यूटल फॉर्म में होता है। लेकिन वो अपनी आईनाइज स्टेट में O2- भी बना सकता है। तो यह सब क्या हैं, आईनाइज स्टेट। जहां भी हमने कहा H+ , + का मतलब क्या है कि यहां पर इसके आउटर ऑरबिट में क्या आ गया। + चार्ज आ गया। जब हमने कहा OH-, तो वहां पर -चार्ज क्या आ गया, चार्ज आ गया। तो यह चार्ज आया ना + और - यह किसकी वजह से आया। सबअटॉमिक पार्टिकल्स के कॉन्बिनेशन की वजह से और यहां पर अब कौन सी फोर्स काम करेगी, अट्रैक्टिव फोर्स। क्योंकि चार्ज कौन सा है, अलग है। तो बेसिकली हमें क्या समझना है। मैं यह समझाने की कोशिश कर रही हूं। पानी तो हम सबके अंदर सेम है। लेकिन पानी का जो कॉन्फ़िगरेशन है ना। इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फ़िगरेशन वो हम सबके अंदर डिफरेंट है। इसी तरह से वायु तत्त्व तो हम सबके अंदर है। लेकिन वायु तत्त्व का इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फ़िगरेशन हम सबके अंदर डिफरेंट हैं। अग्नि का, आकाश का, पृथ्वी का। यह पांचों तत्त्व तो हम सब में हैं। लेकिन पांचों तत्त्वों के अटॉमिक और सबअटॉमिक लेबल पर इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फ़िगरेशन हम सबके अंदर डिफरेंट है। इसीलिए ही हम सब एक दूसरे के साथ मतलब अलग-अलग तरह से बिहेव भी करते हैं। यही उसका एक मूल कारण है और यह जो इनर्जी है, हमारे अंदर। यह हमारे ऊर्जा चक्रों के अंदर संचित है। हम अपनी उस उर्जा को, आज हमारे पास ऐसे डिवाइसेज अवेलेबल हैं कि हम खुद ओरिजनली इनर्जी बिंग क्या हैं। वो हम मेज़र कर सकते हैं। जो हमारे शरीर से इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्स निकलती हैं। हम डिवाइस के थ्रू उसे ऑप्टिमाइज कर सकते हैं और हम उसे जान सकते हैं कि हमारे जो चक्रा हैं। हमारे जितने भी जो ऊर्जा चक्र हैं। वो सेंटर की तरफ होने चाहिए और उनके अंदर हर चक्रा में एक ऑप्टिमम इनर्जी का लेवल होना चाहिए। तो डिवाइस से जब हम अपना इनर्जी ऑरा को मेज़र करते हैं। तो हमें यह पता लगता है कि आज हमारे चक्रास सेंटर से कितना डिशअलाइंड हैं। मतलब जो हमारे लेवल से होते हुए। मस्तिक तक एक पूरी सीधी रेखा जाती है। उससे हमारे चक्रास डेबिट होते हैं और सेंटर से दूर चले जाते हैं। अब आप यह देखना कि दूर जाना भी क्या है। दूर जाने का मतलब भी क्या है, रिपल्शन। स्पिन प्रॉपर्टीज रिपल्शन और जब वो सेंटर की तरफ आ रहे हैं, तो अट्रैक्शन। तो यहां भी अट्रैक्टिव, रिपल्सिव फोर्सेस काम कर रही हैं। यह अट्रैक्टिव और रिपल्सिव फोर्सेस किसके लिए काम कर रही हैं।

उन्हीं सबअटॉमिक पार्टिकल्स की। दूसरा हमारा जो चक्रास हैं। उनका साइज, साइज या तो कम है या फिर ज्यादा है मतलब कोई एक चक्रास का आप देखेंगे। तो यह बहुत ही छोटा सा मिलेगा, आप को। तो यह क्या है, रिड्यूस इनर्जी फ्लो और जहां आप का इनर्जी चक्रा ज्यादा है, बड़ा है। वहां क्या है, हाई इनर्जी फ्लो। तो यह हाई और रिड्यूस इनर्जी फ्लो क्यों है। क्योंकि आप डिफरेंट सबअटॉमिक बिंग हैं।

तो पांच तत्त्वों से बनें। हम सब लोगों की असली पहचान क्या है कि हम एक दूसरे से अलग भी इसलिए हैं। क्योंकि हम सब एक यूनीक सबअटॉमिक बिंग हैं और वो हम क्यों हैं। विकॉज ऑफ द यूनीक इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फीग्रेशन ऑफ ऑल द 5 एलिमेंट्स, व्हिच इज मेकिंग ए ह्यूमन बॉडी। इनर्जी लेवल पर एक दूसरे से डिफरेंट क्यों बनते जाते हैं।

देखिए हमारे अंदर यह सात कलर हैं, विबग्योर (Vibgyor)। जो हमारे ऊर्जा चक्रों के अंदर हैं। लेकिन इनर्जी के साथ एक चीज ओर जुड़ी है। बोलते हैं। E= h new, न्यू (new) मतलब फ्रीक्वेंसी। हर इनर्जी की अपनी एक फ्रीक्वेंसी है और हर इनर्जी के साथ दो चीजें जुडी होती हैं। एक पार्टिकल लाइक कैरेक्टर और एक वेब लाइक करैक्टर। पार्टिकल लाइक कैरेक्टर क्या करता है। मैटर का निर्माण और वेब लाइक करैक्टर क्या करता है। आप को कनेक्ट करता है। आप की दूसरी इनर्जी लेवल से,

यह बात याद रखनी होगी। अब मान लीजिए मेरे पास एक वॉयलेट कलर है। मैं उसके अंदर एक छोटी सी ड्रॉप वाइट कलर की डाल दूं। तो क्या होगा। दिखने में तो वो कलर हमें पर्पल ही लगेगा। उसके अंदर जैसे मैं वाइट कलर डालती चली जाऊंगी। तो क्या होगा। कलर की इंटेंसिटी कम होती चली जाएगी। तो इसी तरह से हम देखें। तो एक ही कलर के डिफरेंट शेड्स बन जाएंगे। फिर एक पॉइंट्स ऐसा आएगा कि जहां पर वो ही वॉयलेट कलर मतलब यहां पर जो हर कलर है या हर कलर का जो शेड है। उसकी अपनी एक रिजोनेटिंग फ्रीक्वेंसी है और यह कलर का शेड भी क्यों डबैल्प हो रहा है। बिकॉज ऑफ द डिफरेंट कॉम्बीनेशन ऐट द सबअटॉमिक लेवल। दिस हैव टू अंडरस्टैंड वेरी वेल, सबअटॉमिक लेवल पर एंड नउ इट इज रिजोनेटिंग। तो प्योर पर्पल या उससे लाइट पर्पल। जितने भी शेड्स हैं, पर्पल कलर के वो अपनी रिजोनेटिंग फ्रीक्वेंसी के ऊपर वाइब्रेट कर रहे हैं और आप को सिमीलर इनर्जी फील्ड जो आप के चारों तरफ है। उसके साथ आप को कनेक्ट कर रहे हैं। इसी तरह से एक पॉइंट ऐसा आएगा। जब उसमें आप वाइट डालते जाएंगे, डालते जाएंगे...। तो वो कलर ट्रांसफार्म हो जाएगा। तो वॉयलेट कलर टोटली ट्रांसफार्म होकर किस में बन जाएगा, इंडिगो कलर में। इसी तरह से इंडिगो किस में बन जाएगा, ब्लू कलर में। ब्लू किसमें कनवर्ट हो जाएगा, ग्रीन कलर में। ग्रीन किस में कनवर्ट हो जाएगा, यलो कलर में। फिर ऑरेंज कलर में और फिर रेड कलर में। इसी तरह से डिफरेंट कलर्स का ट्रांसफॉरमेशन बनता है। लेकिन जिस तरह से वॉयलेट के डिफरेंट शेड्स थे। उसी तरह हर कलर के अपने डिफरेंट शेड्स हैं। दादाजी कई बार एक बात बताते हैं ना, हमें कि ऊपर नंबर वार हैं। यह नंबर वार क्या है। नंबर वार इज नथिंग। इट इज बेसिकली ए ग्रेडियंट। तो हम भी यदि अपने आप को देखें। तो हम भी क्या हैं। हम भी एक इनर्जी ग्रेडियंट हैं। जहां इनर्जी रेड के भी डिफरेंट कॉम्बीनेशंस में अपना रोल प्ले कर रहे हैं। हर कलर अपना एक डिफरेंट कलर के ग्रेडियंट में अपना एक रोल प्ले कर रहा है। इसलिए हर इंसान एक दूसरे से बिल्कुल डिफरेंट है। अब हमें यह देखना है कि यह इनर्जी स्पेक्ट्रम अपने ही अंदर बनाते कैसे हैं। हमें यह समझना होगा कि इसका मूल आधार सिर्फ एक है। वो है, कर्म। हम जब पांच तत्त्वों के अंदर आ जाते हैं। तो हम हर समय कोई ना कोई कर्म करते हैं। अच्छा एक बात ओर जब भी हम कोई कर्म करते हैं। हमारे पास बस सिर्फ दो ही पॉसिबिलिटीज होती हैं। तो हम कुछ अच्छा करते हैं या फिर कुछ बुरा करते हैं। अच्छे और बुरे का अर्थ क्या है। देखिए अच्छे और बुरे का अर्थ है। एक अच्छा जो किसी को तकलीफ ना पहुंचाए या हम ओरिजनली देखें।

तो हम कौन हैं। हम आत्मा हैं। आत्मा में हमारी रियलिटी क्या है। हम आत्मस्वरूप हैं। आत्मस्वरूप की रियलिटी क्या है कि जो भगवान के गुण हैं। वो ही हमारे गुण हैं। दया, करुणा, क्षमा, प्यार, सहनशीलता नम्रता, विवेक। तो यह क्या हैं, भगवान के गुण। यही आत्मा के गुण हैं। यदि हर गुण को हम इनर्जी की फॉर्म में देखें। तो क्या है। यह हर गुण एक हाई इनर्जी स्टेट है और इस हाई इनर्जी स्टेट को बनाने वाले

सबअटॉमिक पार्टिकल्स या वो वाइब्रेशंस फ्रीक्वेंसी कहीं ओर नहीं है। वो हमारे चारों तरफ इस प्रकृति के अंदर ही है। भगवान ने जब निर्माण किया, इस दुनिया का। तो उन्होंने इस सृष्टि के अंदर ही उन पार्टिकल्स को डाल दिया। उन वाइब्रेशनल फ्रीक्वेंसी को डाल दिया। जो उनके खुद के गुण हैं। हमने क्या किया। अब हम जो कोई भी कर्म करते हैं। उसमें हम अपनी एक इनर्जी को यूज करते हैं। तो होता क्या है। गुण- अवगुण में बदल जाते हैं और गुण-अवगुण में कब बदलते हैं। जब हम कोई बुरा काम करते हैं और अवगुण-गुण में फिर से बदल जाते हैं। जब हम कोई अच्छा काम करते हैं और इसी गुण और अवगुण की सायकल में ही कर्म को करते-करते ही हम डिफरेंट इनर्जी को एक्सचेंज करते हैं और अपने अंदर इंबाइब करते जाते हैं और हम एक इनर्जी बिंग बन जाते हैं। डिटेल में हम एक सबअटॉमिक बिंग बन जाते हैं और फिर हम लोगों के साथ अलग-अलग तरह से बिहेव करते रहते हैं। मैं आप को बाद में बताऊंगी कि अल्टीमेट हमारी रियलिटी क्या है।

अब हम यह देखते हैं कि हम यह इनर्जी बिंग बनते कैसे हैं। देखिए हमारे पास हम सबसे पहले ऊपर से शुरू करें। तो भगवान ने सबसे पहले हमारी आंखें बनाई। इन आंखों से हम किसी चीज को देखते हैं। जिस भी चीज को हम देखते हैं। चाहे वो लिविंग हो। चाहे वो नॉन लिविंग हो। एक बात ओर ध्यान में रखनी होगी कि कोई भी चीज डैड नहीं है। किसी भी चीज के अंदर इनर्जी है, क्यों। क्योंकि कोई भी चीज, जो जिस चीज से बनी है। वो किसी चीज से मिलकर तो बनी है। तो उसके भी कोर में कोई ना कोई एलिमेंट्स तो हैं। तो उसका भी सबअटॉमिक पार्टिकल है। उसका भी एक वाइब्रेशन फ्रीक्वेंसी है। तो यह बात आप को

ध्यान रखनी होगी। तो हम जब भी किसी चीज को देखते हैं। तो हमारे पास दो ही पॉसिबिलिटीज होती हैं कि या तो हम उसको एक अच्छे वाइब्रेशन से देख सकते हैं या हम बुरे वाइब्रेशन से देख सकते हैं और जो भी हम कर्म करते हैं। उसी की इक्वल इनर्जी को हम उसी मोमेंट में एक्सचेंज कर लेते हैं और वो उससे ट्रांसफर होकर हमारे पास आती है या हम यह कहें। आंख से देखने पर भी बड़ा कर्म कर जाते हैं। चलिए, एक एग्जांपल के थ्रू समझते हैं। मान लीजिए कि हम किसी काम के लिए जा रहे हैं और हमने देखा कि किसी का एक्सीडेंट हो गया। अब जितने भी लोग हैं। यह भी एक प्रोसेस है कि किसी का एक्सीडेंट हो गया। किसी को चोट लग गई। अब बार-बार जो यह घटना हो रही है। तो उसके आस पास जितने भी लोग खड़े हैं। वो अलग-अलग तरह से रिस्पॉन्ड कर रहे हैं या एक इनर्जी दूसरी इनर्जी को एक अलग तरह से रिस्पॉन्ड कर रही है। क्या-क्या पॉसिबिलिटीज हैं। एक पॉसिबिलिटी है कि एक व्यक्ति ने देखा। वो उस इंसीडेंट को देख कर ही वापिस चला गया। दूसरा था कि वो गया और उसने जानने की कोशिश की कि क्या हुआ। तीसरा था, उसने कुछ कॉल किया, कुछ हेल्प करने की कोशिश की। चौथा था, वो आया। उसके पास जो भी अवेलेबल था। उसने उस सिचुएशन को ओवर कम करने के लिए वो भी दे दिया। पांचवा था कि उसका खुद का बहुत जरूरी काम था। लेकिन उसने सोचा कि पहले इसकी जान बचाना बहुत जरूरी है। तो आप यह देखें। आप इसको एक इंसीडेंस की तरह से मत देखो। आप इसको यह देखो कि यह पूरा प्रोसेस, जिसका एक्सीडेंट हुआ। वो भी एक इनर्जी का एक इंटरप्ले है। आप खुद भी एक इनर्जी बिंग हो और जब आप इस पूरे क्रम में इन्वॉल्व हो रहे हो। किसी भी उसमें, आप एक डिफरेंट इनर्जी को अर्न कर रहे हो। जैसे जो व्यक्ति ने देखा। वो देखकर, उसने अपना रास्ता ही बदल लिया। तो उसी मोमेंट पर उसने, क्योंकि यदि वो देखता नहीं। तो कुछ नहीं होता। लेकिन अब, क्योंकि उसने देख लिया। उसके पास यह इंफॉर्मेशन थी। उसमें भी यदि हम ओर डिपर लेवल पर जाएं। तो कोई कारण होगा कि उसी के पास वो इंफॉर्मेशन क्यों गई। लेकिन उसी समय उसने क्या रिसीव किया। क्योंकि वो हेल्प करने नहीं आया। वो इन आंखों से देख कर, आंख आप का एक मीडिया थी। आप के कर्म कमाने का। आप को एक इंफॉर्मेशन मिली। आप ने एक कर्म कमाया और आप चले गए। लेकिन आप ने मदद नहीं की। तो जिस इंसान ने, एक वो था। जिसका खुद का जरूरी काम था। तो उसने त्याग दिया और वो उसकी मदद करने आ गया। उसी सेम एक इंसीडेंस से एक बहुत हाई इनर्जी एक गुण है ना, कि त्यागना। तो त्यागता भी कौन है। त्याग भी तो एक गुण है ना। आत्मा का गुण है कि अपने काम का त्याग करके दूसरे की मदद के लिए तैयार हो जाए। तो उसने अपनी आत्मा के गुण को यूज़ किया और वो उसकी मदद के लिए आया। उसके मन में करुणा ज्यादा थी। तो उसी समय पर, उसी व्यक्ति ने क्या अर्न कर लिया। उसी समय में उसी व्यक्ति ने आत्मा के उस गुण को और इनर्जी के फॉर्म में, उसी हाई इनर्जी पार्टिकल्स को अपनी इनर्जी का एक हिस्सा बना लिया। वो इनर्जी उसके अंदर चली गई और जो व्यक्ति चला गया। वो धीरे-धीरे, अपने आप को उसने क्या किया। उसने सिर्फ अपने लिए ही सोचा। उसने अपने लिए भी नहीं सोचा। मतलब उसने इंवॉल्व होना भी जरूरी नहीं समझा। हम जानते हैं ना, मन। मन बेसिकली क्या है। मन कुछ नहीं है। मन हमारे शरीर की एक वाइब्रेशनल फ्रिकवेंसी है। हम यदि अपने शरीर के पांचों तत्त्वों को देखें। जो हम इन पांचों तत्त्वों में कहीं भी, जितने भी मोलीक्यूल्स या बायोमोलीक्यूल्स हैं। उनके बीच में, हर जगह पर एम्प्टी स्पेस है। तो जिस तरह से हम चारों तरफ से प्रकाश और वायु से घिरे हुए हैं ना। उसी तरह से हमारे शरीर के अंदर भी यह आकाश तत्त्व है और वायु तत्त्व है। तो आकाश और वायु तत्व क्या है। यह जो वॉयड्स (voids) हैं, हमारे शरीर में (एम्प्टी स्पेस) यह हमारे शरीर के अंदर यह वाइब्रेशनल फील्ड्स क्रिएट कर रही हैं और हमारा मन कुछ नहीं है। हमारा मन इस वाइब्रेशनल फ्रिकवेंसी का एक मतलब पूल है, हम यह कह सकते हैं और आप ने कभी एक बार किसी वीडियो में देखा होगा। क्योंकि इसका क्या फर्क पड़ता है। इसी से ही हम समझ सकते हैं। मान लीजिए हम कोई प्लेट लेते हैं और उसके ऊपर हम सेंड रख देते हैं और उस प्लेट को हम किसी ऐसी डिवाइस से कनेक्ट करते हैं कि जो उसको डिफरेंट वाइब्रेशनल फ्रिकवेंसी देता है। आप ने कुछ वीडियोस में भी देखा होगा। तो आप यह देखोगे कि सेंड के डिफरेंट-डिफरेंट पैटर्नस बन जाते हैं। कभी सफेरीकल, कभी रैक्टेंगल, कभी ट्रायंगल। तो यहां पर क्या हो रहा है कि फ्रीक्वेंसी क्या कर रही है। अलग तरह के स्ट्रक्चर को बना रही है। अब हम अपने सैल्स को देखें। हमारे सैल्स के अंदर जो बायोमोलीक्यूल्स हैं। उनके बीच में भी गैप है। तो हमारा मन कमजोर करने का मतलब क्या या किसी के मन स्ट्रांग होने का मतलब क्या। मन का वीक होना मतलब आप जो भी कर्म कर रहे हो ना। उस कर्म से आपने लॉ इनर्जी पार्टिकल्स से अपने शरीर को भर लिया या हाई इनर्जी पार्टिकल्स से अपने शरीर को भर लिया। क्योंकि यह वाइब्रेशन, आत्मा का क्या है, मूल मन और मन क्या है, वाइब्रेशंस। तो वाइब्रेशंस का जो यह पूल आप के अंदर है। आप याद रखना कि वाइब्रेशन से ही आप के शरीर में सबअटॉमिक पार्टिकल्स और उन सबअटॉमिक पार्टिकल्स से ही पार्टिकल्स और पार्टिकल्स से ही एलिमेंट्स और एलिमेंट्स से ही मॉलिक्यूल्स और मॉलिक्यूल्स से ही बायोमोलीक्यूल्स बनकर आप इंडिविजुअल बनेंगे। तो आप को यह याद रखना होगा कि भगवान ने आत्मा का मूल मन क्यों बनाया। मन यदि आप का स्ट्रांग है। मन स्ट्रांग होने का

मतलब क्या है कि मन उसी का स्ट्रांग होगा। जो आत्मस्वरूप के रास्ते पर चलेगा। जो भगवान के दिखाए गुणों को या उन हाई-इनर्जी फील्ड्स को, हर कर्म से अपने अंदर अर्जित करेगा। उसी व्यक्ति का मन स्ट्रांग होगा और जो बिल्कुल इसका ऑपोजिट चलेगा। वो अवगुण कर रहा है।

वो देख कर चला गया वापिस। उसने केयर नहीं की ना। भगवान तो कहता है, मदद करो। मदद करने के लिए नहीं गया। उसी समय में, उस कर्म से क्या अर्न किया, लॉ इनर्जी फील्ड। वो आज एक बार करेगा। वो दूसरी बार करेगा, तीसरी बार करेगा, चौथी बार करेगा। फिर क्या होगा कि जैसे हम कहते हैं। हर चीज एक बीज होती है। उसी तरह से यह जो इनर्जी है। वो उसी समय में अपने शरीर के अंदर इंबाइब करता जा रहा है। आप यह समझिए कि उसने अपने अंदर बीज खुद ही निर्माण कर लिया और वो अब सिमिलर इनर्जी मतलब उसके सामने बार-बार यह इंसीडेंस होगा ना। वो बार-बार उसी चीज को रिपीट करेगा। क्यों करेगा। क्योंकि उसके अंदर जो एक पार्टिकल अभी बन गया। वो सेम पार्टिकल को ही अट्रैक्ट करेगा। क्योंकि यहां पर यह बात बहुत गहराई से समझने वाली है, देखो कि आत्मा का गुण है या इनर्जी बेसिकली क्या हो रही है। इनर्जी हर तरह से बस ट्रांसफार्म ही होती है। गुण से अवगुण में, अवगुण से गुण में। आत्मस्वरूप में या फिर आत्मस्वरूप से उल्टे कैरेक्टर में। चाहे इंसान कहीं भी खड़ा हो। उसके पास पूरी पॉसिबिलिटी है। अपने आप को ट्रांसफार्म करने की।

होता क्या है, हमारे शरीर में कोई ना कोई ऐसा मकैनिज्म है। जिससे पहली बार हम इनर्जी को लेते हैं और फिर हम उसी इनर्जी को प्रॉपेगेट करते हैं। बस, यहां पर ही हमारे सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। जब हमारे पास, हमने कोई भी कर्म किया। तो हमने उसी समय में, अपने सामने की एक इनर्जी फिल्ड से एक उसी कर्म से, उसी इनर्जी को संचित किया। वो हमने यदि एक अच्छा कर्म किया था। तो वो एक स्ट्रांग वाइब्रेशनल फ्रिकवेंसी हमारे अंदर लेकर आएगा। हमारे मन को स्ट्रांग करेगा। मन को स्ट्रांग, मन के अपने मतलब बहुत अलग काम हैं। लेकिन मन को स्ट्रांग करेगा। तो आप के अंदर क्या होगा। हाई ईनर्जी फील्ड्स ऑटोमेटिकली आप के ऑरा के अंदर, आप के शरीर के अंदर निर्माण होने शुरू हो जाएगा और वो हाई ईनर्जी फील्ड्स ही आप को आत्मस्वरूप इनर्जी के रूप में बनाएगी। आत्मस्वरूप कुछ नहीं है। आत्मस्वरूप, आप के अंदर वो हाई ईनर्जी फील्ड्स का बनना ही आत्मस्वरूप है। जो आप अपने कर्मों से ही अर्जित कर रहे हो और लॉ इनर्जी फिल्ड इज नथिंग, आत्मस्वरूप से जब हम दूर जा रहे हैं। तो हम लॉ इनर्जी फिल्ड में जा रहे हैं।

तो यहां पर हमने आंखों का एक एग्जांपल लिया कि हमने आंखों से जो किया। हमने एक कर्म किया। इसी तरह से जब हमारे कान, कान क्या करते हैं। मतलब कुछ भी अच्छा या बुरा करके कर्म अर्जित कर सकते हैं। उसी तरह से हम कानों से कुछ अच्छा या बुरा सुनकर भी एक इनर्जी को एक्सचेंज करते हैं। यह बात थोड़ी सी अजीब लग सकती है। लेकिन यही सच है। देखिए हर इंसान की अपनी एक लाइकिंग और डिसलाइकिंग होती है और इन कानों से जब कुछ भी सुनते हैं। कुछ भी सुनें। तो सुनते समय भी एक उर्जा को एक्सचेंज करते हैं। जैसे मान लीजिए एक इंसान है। उसे पॉप म्यूजिक सुनना पसंद है। दूसरे को माइकल जैकसन, तीसरे को शास्त्रीय संगीत सुनना, चौथे को भजन सुनना, पांचवें को ज्ञान सुनना

और छठे को बेहद का ज्ञान सुनना। यहां पर क्या है कि सुन तो हर कोई रहा है। लेकिन उसकी जो आत्मा है। वो अलग-अलग तरह की चीजों को सुनना चाह रहा है। वो उसे सुनेगा। उसकी इंद्रियां ही तृप्त होंगी। लेकिन वो अपने कौन सी इंद्री को किस तरीके से तृप्त करना चाहता है। यह उस इंडिविजुअल इनर्जी बिंग पर डिपेंड करता है। तो यहां भी क्या है। दो ही पॉसिबिलिटीज हैं। कुछ अच्छा या कुछ बुरा। तो कान से भी हम क्या कर रहे हैं। कुछ अच्छा या कुछ बुरा कर्म ही कर रहे हैं। जैसे मान लीजिए हम जाने या अनजाने में कर्म को कैसे अर्जित करते हैं। फॉर एग्जांपल, तीन-चार लोग अपने ग्रुप में बैठे हैं। दे आर गॉसिपिंग टुडे एंड नउ द टॉक इज नॉट हेल्दी। वो एक बुरी बात, मतलब बुरी बात इन द सेंस, कोई मान लीजिए कोई मुंगफली खा रहा है, कोई स्वेटर बुन रहा है, कोई भी एक काम कर रहा है और ग्रुप ऑफ द पीपल चैटिंग विद ईच अदर कि वो ऐसा है। किसी की बुराई कर रहे हैं। समाज ऐसा है। बच्चे बुरे हैं। तो वहां पर क्या हो रहा है। जो-जो बोलता जा रहा है। जिस-

जिस के बारे में बोलता जा रहा है। वो उस की ऊर्जा से उसी समय में कनेक्ट होता जा रहा है। उसे एहसास नहीं है। हर इंसान एक बहुत ही बड़े जैसे अनभिज्ञ है कि उसके चारों तरफ एक इनविजिबल इनर्जी फिल्ड काम कर रही हैं। जो हमें अपनी आंखों से दिखाई नहीं देतीं। जब भी हम किसी के लिए कुछ बुरा सुनते हैं। जिस व्यक्ति के बारे में सुनते हैं। उसी समय में हमारे शरीर की इनर्जी, उसके शरीर की इनर्जी में जाती है और यह इनर्जी फील्ड कैरियर की तरह काम करके, उसी की इनर्जी हमारे पास लेकर आती हैं। हम बातों ही बातों में लगातार घंटो-घंटो एक दूसरे के बुराइयां करते रहते हैं। बातें करते रहते हैं। दुनिया को ही बुरा कहना शुरू कर देते हैं। तो हम सोचते हैं। हम तो कुछ नहीं कर रहे थे। हम तो मूंगफली खा रहे थे। हम तो स्वेटर ही बुन रहे थे। लेकिन आप को यह नहीं पता। उस कर्म को करते करते, ना जाने आप ने कितनी लॉ इनर्जी फिल्ड को अपने अंदर एक्यूमुलेट कर दिया और या फिर किसी एक अच्छे टॉपिक पर चर्चा कर रहे थे। तो हमने यहां पर क्या किया। हम कुछ अच्छी बातें कर रहे थे। हम किसी के उत्थान के लिए कार्य कर रहे थे। तो इन कानों से सुन कर भी हमने या मान लीजिए हमने टीवी पर कोई न्यूज़ देखी।

हमने देखा कि किसी पार्टीकूलर जगह पर बाढ़ आने वाली है। तो हम क्या कर रहे हैं। तो हम उसके बारे में नेगेटिव चर्चा भी कर सकते हैं। यहां तो देखो गवर्नमेंट कुछ करती नहीं है। कुछ भी हम बोल सकते हैं। तो हम क्या कर रहे हैं। अननेसेसरीली एक नेगेटिव टॉक बोलते जा रहे हैं। तो हमने एक चीज देखी। हमने एक चीज सुनी कि एक जगह पर कोई प्रॉब्लम है और हमने उसको कुछ हल ढूंढने की बजाए, ओर नेगेटिव बोलना शुरु कर दिया। तो आप को क्या लग रहा है कि आप इन सभी, अपनी जो एक्टिविटीज या रिस्पांस होते हैं ना। उसी से ही उसी समय में अपने कर्म को अर्जित करते हो। एक है कि एक इंसान अपने इंटेलेक्ट को उसी समय यूज करता है और वो सोचता है कि यहां पर बाढ़ आने वाले है। तो मैं क्या कर सकता हूं। वो अपने घर में, उसी समय बैठकर बहुत कुछ कर सकता है। वो वहां पर रिलीफ के लिए कुछ भेज सकता है। वो कुछ नहीं, तो वहां पर बैठकर भगवान से प्रार्थना कर सकता है। वो ध्यान में बैठ सकता है। वो अपने संकल्पों से सेवा कर सकता है। वो बहुत कुछ कर सकता है। लेकिन कोई भी व्यक्ति क्या करेगा। यह उसके ऊपर डिपेंड करता है कि वो खुद कैसा इनर्जी बिंग है। तो यहां पर भी आप ने कान से कुछ भी, किसी भी तरह की इंफॉर्मेशन को सुनकर अच्छे या बुरे मतलब एक कर्म था। आप ने उस कर्म की इनर्जी को अपने साथ एक्सचेंज ही किया। परमशांति...